Vol 6 Issue 2 March 2016

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

Indian Streams Research Journal
International Recognized Multidisciplinary Research Journal
ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | March - 2016

भारतीय भाषाओं में रामकाव्य और अहमदबख्श थानेसरी कृत हरियाणवी रामायण

कृष्णचन्द रल्हाण
पूर्व कुलसचिव, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
कुरुक्षेत्र।

प्रस्तावना :

आज समूचे राष्ट्र में भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकता खण्डित होती जा रही है। लोग अपनी पहचान विस्मृत कर रहे हैं। चारों तरफ देश की एकता एवं अखण्डता की बात की जा रही है, किन्तु यह एकता और अखण्डता केवल परिहास बनकर रह गई है। हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध रामकाव्य पर गहनता से विचार करना अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन होगा। प्रत्येक प्रदेश की संस्कृति एवं सभ्यता की धरोहर इन काव्य-ग्रंथों पर विचार करना निश्चित ही भावात्मक एवं सांस्कृतिक एकसूत्रता का परिचायक है। अतः प्रमुख भारतीय भाषाओं एवं बोलियों का रामकाव्य इस प्रकार है –

1.तमिल–रामकाव्य – रामायण और महाभारत भारतवर्ष की सामासिक संस्कृति के ग्रंथ हैं, जिनसे प्रेरित होकर भारतवर्ष के प्रत्येक प्रांत एवं अंचल में अपनी क्षेत्रीय भाषा में रामकथा पर काव्य रचे गए। तमिल भाषा का प्रदेश भी इसका प्रमाण है। लगभग दो हजार वर्ष पूर्व तमिल में रचित 'पुरनानरू' नामक कृति में रामचरित का उल्लेख मिलता है। ईसा की दूसरी शताब्दी में रामकथा सम्बन्धी महाकाव्य 'शिल्प्पदिहारम्' मिलता है। ८वीं शताब्दी में १२ अलवारों के भक्ति सम्बन्धी पद 'नालायिर प्रबन्धम्' नामक ग्रंथ में प्रकाशित हुए। इनमें से कुलशेखर आलवार ने अपने ग्रंथ 'पेरुमाल तिरूमोषि' में बाल राम के प्रति माता कौशल्या के वात्सल्य एवं विरही दशरथ का चित्रण किया है। रामकथा सम्बन्धी विधिवत महाकाव्य की सर्जना का श्रेय महाकवि कम्बन को जाता है। इनकी कृति 'कम्ब रामायण' जो कि १२वीं शताब्दी की रचना है, ने तमिल साहित्य में क्रान्ति उपस्थित कर दी। महाकवि कम्बन के समय

तमिल प्रदेश में चोल राजाओं का राज्य था। इन धर्मवर्धन राजाओं के कारण तमिल प्रदेश धन धान्य से परिपूर्ण था। यही कारण है कि उनकी रामायण में तमिल प्रदेश का प्राकृतिक वैभव एवं सामाजिक समृद्धि चित्रित हुई है।

2.तेलुगु रामकाव्य – तेलुगु साहित्य में रामकथा तो उसके प्रादुर्भाव से ही उपलब्ध है, लेकिन रामकाव्यों में सर्वप्रथम गौन बुद्धा रेड्डी द्वारा रचित 'रंगनाथ रामायण' उपलब्ध है, जो कि तेरहवीं शताब्दी की रचना है। डॉ. परमलाल गुप्त ने १२३० ई. स्वीकार किया है। 'रंगनाथ रामायण' 'वाल्मीकि रामायण' के बालकाण्ड से लेकर युद्ध काण्ड तक की घटनाओं का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करती है। 'रामचरितमानस' से लगभग तीन सौ साल पहले की यह रचना अत्यंत सरल, सुबोध एवं लोकप्रिय है। गांवों एवं जनपदों में भी इसका गायन किया जाता था। यद्यपि 'रगंनाथ रामायण' का समूचा कथानक 'वाल्मीकि रामायण' पर आधारित है, किन्तु फिर भी उसकी कुछ मौलिक उद्भावनाएं हैं।

'रगंनाथ रामायण' के पश्चात् तेलगुगु रामकाव्य में 'भास्कर रामायण' प्रमुख है। दोनों का रचनाकाल लगभग समान है। किन्तु 'रगनाथ रामायण' जनमानस को दृष्टि में रखकर द्विपद नामक देसी छन्द में लिखी गई जबकि 'भास्कर रामायण' प्रोढ़, प्रांजल एवं परिमार्जित भाषा एवं विविध छन्दों में प्रणीत है। कथावस्तु के आधार पर लगभग दोनों में समानता है। १५वीं-१६वीं शताब्दी में आतुकूरि मोल्ल नामक कवयित्री द्वारा रचित 'मोल्ल रामायण' उपलब्ध होती है। तेलुगु रामकाव्य-परम्परा 'मोल्ल रामायण' से भक्ति भावना को लांघकर काव्य-शक्ति का आधार बनने लगी। काव्य शास्त्र के मर्मज्ञ अय्यलराजु रामभद्रुडु ने 'रामाभ्युदयम' नामक काव्यशास्त्री रामकथा लिखी। १६वीं शताब्दी के अन्त में ही राजा रघुनाथ नाम की 'रघुनाथ रामायण' मिलती है। इसके बाद कूचिमंचि तिम्मकवि की 'अच्च तेलुगु रामायण' है। यह रचना १७वीं शती की है। रामकाव्य को लेकर पिंगली सूरना कृत 'राघव पाण्डवीयमु' तथा नेल्लूरि वीर राघव कृत 'राघव यादव पाण्डवीयसु' नामक श्लेष काव्य भी मिलते हैं।

3.मलयालम रामकाव्य – रामकथा की अमृतधारा मलयालम भाषा में भी प्राचीनकाल से ही बहती आ रही है। तिरुवितांकुर के राजा श्री वीररामवर्मा द्वारा रचित १२वीं शताब्दी में 'रामचरितम्' सबसे प्राचीन एवं महत्वपूर्ण रामकाव्य ग्रंथ है। रामायण के युद्ध काण्ड की कथा को ही इस काव्य ग्रंथ में विषय बनाया है। यह कृति मलयालम की प्रस्तुति काव्य शैली 'पाट्टु' में लिखी गई है। इसी परम्परा में दूसरी रचना पूनं नंपुतिरि कृत 'रामायण चंपू' उपलब्ध है। इस काव्य में रावण के उद्भव से लेकर राम के सवर्गारोहण तक की कथा संस्कृत मिश्रित मलयालम शैली में चित्रित हुई है। इसके अतिरिक्त पन्द्रहवी शताब्दी में ही कवि कण्णश पणिकर कृत 'कण्णश रामायण' मिलती है। मलयालम की रामकाव्य परम्परा में सबसे प्रसिद्ध कृति एषुत्तच्छन कृत 'अध्यात्मरामायणम्' है। 'रामचरितमानस' की तरह यह रामायण भी मलयालम प्रदेश के लोगों के लिए लोकप्रिय है। इसका रचनाकाल डॉ. मलिक मोहम्मद के अनुसार उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर सोलहवीं शताब्दी है। डॉ. कमिल बुल्के ने इसका रचना काल १५७५ ई. से १६५० ई. के बीच उद्घृत किया है। संस्कृत की 'अध्यात्म-रामायण' इसका मूल स्त्रोत है। मलयालम 'अध्यात्मरामायणम्' का कथानक वाल्मीकि अनुसार है, किन्तु इसका उत्तर काण्ड भी प्रक्षिप्त माना जाता है। इसकी कथा रामावतार से आरंभ होती है, जिसमें अवतार लीला पर बड़ा जोर दिया गया है। यह रामकाव्य लगभग तुलसीकालीन है, यही कारण है कि इसमें युगीन परिवेश की छाप एवं 'मानस' का रंग देखने को मिलता है।

4.कन्नड़ रामकाव्य – कन्नड़ साहित्य में रामकथा की दो परम्पराएं विद्यामान हैं - एक जैन परम्परा और दूसरी जैनेतर परम्परा। कन्नड़ जैन रामकाव्य परम्परा 'पउमचरिउ' के आधार पर चली। कन्नड़ साहित्य का सर्वप्रथम लक्षण ग्रंथ 'कविराजमार्ग' जैन नरेश नृपतुंग द्वारा प्रणीत ८५० ई. में मिलता है, जिसमें यत्र-तत्र रामायण के उद्धरण है। जैनकाव्यपरम्परा में प्रथम काव्य सन् ६५० ई. में पोन्न कवि द्वारा रचित 'भवनैक रामाभ्युदय' है। दूसरी कृति सन् १६७१ में लिखित चावुण्डाराय की 'चावुण्डराय पुराण' है। समूचे रामकथानक को लेकर लिखा गया प्रथम कन्नड़ जैन रामकाव्य नागचन्द्र कृत 'परम्परामाण' है। इसका रचनाकाल लगभग ग्यारवी शताब्दी है। तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कुमुदेन्दु मुनिकृत 'कुमुदेन्दु रामायण' मिलती है, जिस पर नागचन्द्र का प्रभाव है। कन्नड़ जैन रामकाव्यों में रामायण की कथावस्तु जैन धर्म के सिद्धांतों एवं दर्शन पर आधारित हैं।

5.बंगला रामकाव्य – बंगला रामकाव्य का आरंभ 'कृतिवासी रामायण' से स्वीकार किया जाता है। इसका रचनाकाल पन्द्रहवीं शताब्दी है। इसमें मूलकथा वाल्मीकि पर आधारित है। इसकी कथा राम वन गमन से लेकर सीता के भूमि में समा जाने तक हैं। डॉ. कामिल बुल्के ने राक्षसों की रामभक्ति से संबंध रखने वाले अंश प्रक्षिप्त माने हैं। डॉ. रामनाथ त्रिपाठी ने 'कृतिवासी रामायण' के आधार स्त्रोत, 'आनन्द रामायण', 'पद्मपुराण', 'जैमिनी भारत', 'श्रीमद्भागवत पुराण' एवं 'अध्यात्म रामायण' माने हैं। इस रामायण में लोकप्रचिलत कथानक, युगीन परिवेश एवं बंगाली संस्कृति से प्रभावित नूतन उद्भावनाएं वर्णित हैं। इसमें वर्णन की पांचाली शैली का प्रयोग किया जाता है, जिसके कारण यह जनसाधारण से अधिक प्रचलित हुई हैं।

आधुनिक युग यानि बीसवीं शताब्दी में 'कृतिवासी रामायण' के पश्चात माइकेल मधुसूदन दत्त कृत 'मेघनाथ-वध' महाकाव्य सबसे प्रसिद्ध रचना है। इससे पूर्व डॉ० कामिल बुल्के ने रघुनन्दन गोस्वामी कृत 'रामरसायन' को साहित्यिक दृष्टि से श्रेष्ठ माना है। 'मेघनाथ-वध' में कवि ने साहित्यिक एवं सांस्कृतिक रूढ़ियों को तोड़कर एक नया आयाम दिया है। राम-लक्षमण की अपेक्षा रावण एवं मेघनाथ के चरित्र को अधिक उत्कर्ष देना कवि की सन्तुलित दृष्टि हैं एवं युगीन समाज के रावणीकरण एवं मेघनादीकरण का चित्रण है। निःसन्देह बंगला साहित्य में भी रामकाव्य की परम्परा विशाल है जो मूल रूप से 'कृतिवासी-रामायण' के माध्यम से हमें बंगाली संस्कृति और उसके विविध आयामों से अवगत कराती है।

6.उड़िया रामकाव्य – उड़िया रामकाव्य में रामकथा सम्बन्धी प्रथम कवि सारलादास हैं और उनकी रामायण 'विलंका रामायण' है। इसका रचनाकाल पन्द्रहवीं शताब्दी माना जाता है। सारलादास का असली नाम डॉ. कामिल बुल्के ने सिद्धेश्वर परिडा स्वीकार किया है। उनकी इष्टदेवी सरला चंडी थी, जिस कारण इन्होंने अपना नाम सारलादास रख लिया। इनकी रामायण का आधार भी वाल्मीकि है, जिसमें कथानक बड़ा संक्षिप्त है। पन्द्रहवी शती के उत्तरार्ध में अर्जुनदास कृत 'रामविभा' नामक कृति मिलती है, जिसमें पौराणिकता की अपेक्षा राग-रागनियों का प्राधान्य है।

उड़िया में सबसे प्रसिद्ध रामकाव्य सोलवीं शताब्दी में बलरामदास द्वारा रचित 'दांडी रामायण' है। इसके दो और राम है - 'जगमोहन रामायण' एवं 'बलरामदास रामायण'। इस रामायण का भी मुख्य आधार वाल्मीकि ही है, किन्तु कवि ने इसमें अनेक परिवर्तन किए हैं। ये परिवर्तन समसामयिक सामाजिक स्थिति एवं उड़िया प्रदेश की संस्कृति के अनुकूल हैं। इस रामायण का आरंभ जगन्नाथ-वंदना से होता है जो कि उड़ीसा की धार्मिक परम्परा है। बलरामदास ने ऋष्यश्रृंग के प्रसंग में वाल्मीकि के समान श्रृंगार-चेष्टाओं का वर्णन किया है, जो कि लगभग प्रादेशिक रामायणों में समान है। बलरामदास का जयंत भी कौए का रूप धारण करके सीता के स्तनों में प्रहार करता है। शूर्पणखा मनुष्य के पद-चिन्ह देखकर राम-लक्षमण को खाने के लिए आती है।

7.असमीया रामकाव्य – डॉ. कामिल बुल्के ने प्रादेशिक आर्य भाषाओं का प्राचीनतम रामसाहित्य असमीया, बंगला और उड़िया में सुरक्षित बताया है। कृत्तिवास एवं बलरामदास के समान असमीया-साहित्य में भी माधवकंदली कृत 'रामायण' सबसे प्रमुख मानी जाती है। यह रचना चौदहवी शताब्दी की है। इसका अधार भी वाल्मीकि है। डॉ. कामिल बुल्के के अनुसार इसकी रचना तीन लब्धप्रतिष्ठ कवियों द्वारा की गई है। अयोध्या से युद्ध तकं पांच काण्ड माधवकंदली ने लिखे, उत्तरकाण्ड शंकरदेव ने और आदिकाण्ड शंकरदेव के शिष्य माधवदेव ने की। माधवकंदली कृत पांच काण्ड 'वाल्मीकि रामायण' के गौड़ीय पाठ पर आधारित हैं, शंकरदेव कृत उत्तरकाण्ड की कथा भी वाल्मीकि के अनुसार है। माधवदेव कृत बालकाण्ड 'कृत्तिवासी-बंगला रामायण' पर आधारित है। माधव कन्दली ने अपनी रामायण के आरंभ में वाल्मीकि का आधार स्वीकार किया है। यह रामयण निःसन्देह असमीया-संस्कृति का दर्पण है।

8.मराठी रामकाव्य – हिन्दी साहित्य के इतिहास में मध्यकाल अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है क्योंकि तुलसी का अविर्भाव इस काल की देन है। मराठी साहित्य में भी एकनाथ का आविर्भाव लगभग सोलहवीं शताब्दी ही है, उनकी 'भावार्थ रामाण' १५९६ ई. की रचना है। एकनाथ के तीन मुख्य आधार हैं - 'वाल्मीकि रामायण-, 'अध्यात्मक रामायण' एवं 'आनन्द रामायण'। डॉ. बुल्के के अनुसार 'भावार्थ-रामायण' पर 'आनन्द रामायण' की गहरी छाप है। इसके कुछ प्रसंग 'पउमचरियम्' से मिलते हैं। उत्तर काण्ड वाल्मीकि उत्तरकाण्ड के समान है। 'भावार्थ-रामायण' में अध्यात्मिक के साथ-साथ सामयिक सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति पर व्यंग्य किए गए हैं। १६०५ ई. में कृष्णदास मुद्गल कृत 'रामायण' आती है। जिसमें वीर रस प्रधान उक्तियां हैं। १६५८ ई. में समर्थ रामदास की 'द्वीकांडात्मक रामायण' में अकर्मण्यवादी हिन्दुओं को प्रयत्नवाद की शिक्षा दी गई हैं।

9.गुजराती रामकाव्य – गुजराती साहित्य में रामकथा की अपेक्षा कृष्णकथा को अधिक स्थान मिलता है। फिर भी पन्द्रहवी शताब्दी से रामकाव्य की परम्परा मिलती है। इस शताब्दी की रचनाएं हैं - भालण्कृत 'रामबालचरित' तथा 'सीता-विवाह'। सोलहवीं शताब्दी में विष्णुदास कृत 'रामायण' एवं 'उत्तरकाण्ड' तथा कर्मण मत्री कृत 'सीताहरण' नामक रचनाएं मिलती हैं। सत्रहवीं शताब्दी की रचनाओं में मधुसूदन-कृत 'युद्धकाण्ड', श्रीधर-कृत 'रावण-मन्दोदरी संवाद' कासीसुतराय-कृत 'हनुमान चरित्र', प्रेमानन्द कृत 'रणयज्ञ' और हरिदास कृत 'सीता-विरह' हैं। डॉ. कामिल बुल्के के अनुसार भालण के पुत्रों उद्धव और विष्णुदास ने सोलहवीं शताब्दी में समस्त रामायण की रचना की थी, लेकिन वह प्रचलित न हो सकी। आजकल गुजरात में अठारवीं शताब्दी का गिरधरदास कृत 'रामायण' सबसे श्रेष्ठ रामकाव्य माना जाता है और सबसे लोकप्रिय भी है। आधुनिक काल में ही 'मानस' एवं 'अध्यात्म रामायण' का गुजराती में अनुवाद हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में ही 'रामायणनां रामवला-, 'राम नाधारमास', 'रामराज्यभिषेक नां घोल', 'रामजन्मनी गरवी', 'राम विवाह नां सलोको' आदि ठेठ गुजराती रचनाएं मिलती हैं। समूचे गुजराती रामकाव्य पर सिंहावलोकन करने से ज्ञात होता है कि यह 'वाल्मीकि रामायण' और 'अध्यात्म रामायण' पर आधारित है, फिर भी इस साहित्य में गुजरात प्रदेश की युगीनता से अवगत अवश्य कराया है।

10.कश्मीरी रामकाव्य – कश्मीरी साहित्य में रामकथा का प्रवेश काफी बाद में हुआ है। वास्तव में कश्मीरी रामकाव्य का प्रणयन उन्नीसवीं शताब्दी में लोकगीतों के संग्रह 'प्रकाश रामायण' से होता है। इस ग्रंथ में कुछ प्रसंग अजीब है, यथा सीता मन्दोदरी की पुत्री होना, सीता के बनवास का कारण उसकी ननद और कुश जन्म की कथा आदि। इस काव्य ग्रंथ में दशरथ यज्ञ से लेकर सीता के भूमि प्रवेश एवं सीता के स्वर्गरोहण तक की कथा 'वाल्मीकि रामायण' के अनुसार वर्णित है। डॉ. कामिल बुल्के ने 'कश्मीरी रामायण' या 'रामावतारचरित' की रचना आठारहवीं शताब्दी में दिवाकर प्रकाश भट्ट द्वारा विरचित मानी है। 'प्रकाश रामायण' भी इसी का नाम है। इसी रामायण से प्रभावित 'शंकर रामयण' १८८८ ई. 'विष्णु प्रताप रामायण' १९१३ ई. नामक रचनाएं लिखी गई हैं। कश्मीरी साहित्य रामकथा से अछूता न होकर पुष्ट भी नहीं है। फिर भी कश्मीरी रामायण वहां के लोकजीवन की गाथा गाती है।

11.पंजाबी रामकाव्य – गुरुओं एवं संतों की पावन स्थली पंजाब भी रामकथा से अनभिज्ञ नहीं था। पंजाब में रामकाव्य की एक स्वस्थ परम्परा देखने को मिलती है। मध्ययुग में पंजांब की स्थिति अत्यंत दयनीय एवं भयंकर थी। जिसकी प्रतिक्रिया गुरुओं की वाणी में देखने को मिलती है। डॉ. मनमोनह सहगल ने पंजाब में रामकाव्य की शुरूआत वि. स. १६६१ से स्वीकार की है। गुरुवाणी संग्रह

'ग्रंथ साहब' में राम की सत्ता स्वीकार की गई है। इस 'आदि ग्रंथ' की मूल प्रति से लिपिक और पंजाब के निर्गुण पंथ के प्रमुख प्रचारक एवं प्रवक्ता भाई गुरदास की वीरों में सारांश रूप में रामकथा के कतिपय प्रसंग देखे जा सकते हैं।

साहित्यिक दृष्टि से पंजाबी रामकाव्य की कड़ी में प्रथम रचना 'आदि रामायण' है, इसके लेखक सोढ़ी मेहरबान है, जो पंचम सिख गुरु अर्जुनदेव के बड़े भाई पृथ्वीचन्द के लड़के थे। इसका रचनाकाल लगभग वि.स. १६७६ हैं क्योंकि लेखक का देहान्त वि.स. १६९६ में हुआ था। इसी यगु की दुसरी कृति हिरदेराम भल्ला कृत 'हनुमन्नाटक' है। इसकी रचना वि.स. १६८० में हुई थी। तीसरी कृति गुरु गोबिन्द सिंह कृत 'रामावतार' है, जो 'वाल्मीकि रामायण' एवं 'अध्यात्म रामायण' पर आधारित हैं। सत्रहवीं एवं अठारहवीं शताब्दी की रचनाओं में देवदास कृत 'लव-कुश दीवार', यशोदानन्दन कृत 'लवकुशदीवार', जवाहर सिंह कृत 'वारश्री रामचन्द्र जी की' गुरदास सिंह कृत 'वारांमह श्री रामचन्द्र जी का', तुलसीदास कृत 'बिसनपदे रामायण दे' शामिल है। समस्त पंजाबी रामकाव्य पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि काव्यकला और लोकप्रियता की दृष्टि से ये तीन रचनाएं महत्वपूर्ण हैं - 'रामावतार'-गुरुगोबिन्द सिंह, 'अध्यात्मरामायण'-अनु. गुलाब सिंह एवं 'वाल्मीकि रामायण'-अनु. संतोख सिंह। किन्तु 'कालिदास-रामायण', दिलशाद कृत 'पंजाबी-रामायण', ब्रजलाल शास्त्री कृत 'राम-गीत' की लोकप्रियता एवं महत्व को हम अनदेखा नहीं कर सकते। यद्यपि समूचे पंजाबी रामकाव्य कें आधार ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण', 'रामचरितमानस', 'अध्यातम रामायण' एवं 'रामचन्द्रिका' हैं, किन्तु फिर भी सभी रचयिताओं ने जो परिवर्तन एवं संशोधन किये हैं, वह युगीन परिस्थितियों के अनुकूल एवं स्वस्थ संस्कृति के द्योतक हैं।

12.हरियाणवी रामकाव्य – अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' हरियाणवी में प्रकाशित प्रथम रामकाव्य है। इससे पूर्व हरियाणावी लोकसाहित्य में रामकथा के पात्रों का यथा सम्भव नाम तो आया है, किन्तु समूची कथा को काव्य रूप प्रदान करने का श्रेय सर्वप्रथम अहमदबख्श को ही जाता है। हालांकि यह रामायण देवनागरी लिपि में रचित है, किन्तु हरियाणावी बोली पर आधारित है। प्रस्तुत रचना कुरुक्षेत्र निवासी उर्दू और हिन्दी के विद्वान श्री बालकृष्ण मुज्तर के सम्पादन में हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़ द्वारा सन् १९८३ ई. में प्रकाशित की गई है। इसका रचनाकाल प्रकाशन के लगभग एक सौ वर्ष पूर्व था यानि इसे हम भारतेन्दु युग की रचना कह सकते हैं। विवेच्य 'रामायण' छः काण्ड़ों में विभाजित है और १६७३ चम्बोलों में अनुबन्धित है। साहित्यिक दृष्टि से यह रचना सांग-शैली के अंतर्गत आती है।

1.प्रेरणा स्त्रोत – अहमदबख्श थानेसरी कम पढ़े-लिखे होने के कारण भी एक उच्च कोटि के विद्वान एवं बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। उन्होंने विभिन्न विद्वानों द्वारा रचित रामकथा का भली-भांति अध्ययन किया हुआ था। रामकथा के आदिकाव्य 'वाल्मीकि रामायण' का उन्होंने अध्ययन किया हुआ था, जिससे उन्होंने प्रेरणा ग्रहण की थी। उनकी 'रामायण' के अनेक प्रसंगों एवं घटनाओं से यह बात स्पष्ट झलकती है। बालकृष्ण मुज्तर ने भी इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लिखा है - 'कवि अहमदबख्श की प्रस्तुत पुस्तक 'रामायण' का धरातल संत तुलसीदास का 'रामचरितमानस' न होकर महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण' है। कुछ स्थलों पर अहमदबख्श 'वाल्मीकि रामायण' के अतिरिक्त 'आनन्द रामायण' से भी प्रभावित जान पड़ते हैं। स्पष्ट है कि अहमदबख्श ने 'वाल्मीकि रामायण' का भरपूर लाभ उठाया है। अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' के प्रेरणा-स्त्रोतों में तुलसीदास-कृत 'रामचरितमानस' भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। तुलसीदास का तो अहमदबख्श ने कई स्थलों पर उल्लेख तक किया है।

कट कट फिर असुर जीवित झट झट प्रभु मन में सोच विचारत हैं
सब देवता लोग बिवान चढ़े सिरधुन आहाकार पुकारत हैं
देखत महादुखत भक्त-बत्सल आपनी माया रच डारत है
सौ चौदां सहस अुसर तन तन श्री रामरूप विस्तारत हैं।

मुकताल

एक को एक दिखता दास तुलसी यही लिखा
जिसे लिखे पर सावधान अहमद कविता दिखता।

अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' के अध्ययन से भी प्रतीत होता है कि कवि ने 'रामचरितमानस' से प्रेरणा ली थी। बालकृष्ण मुज्तर ने लिखा है - 'कवि अहमदबख्श थानेसरी की रामायण में कई प्रसंग ऐसे हैं, जिससे यह निशानदेही मिलती है कि उसने संत तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' से भी लाभ उठाया है। अहमदबख्श थानेसरी ने 'वाल्मीकि रामायण', 'रामचरितमानस', 'आनन्द रामायण', 'अध्यात्म रामायण' के अलावा 'बंगला रामायण', 'ओड़िया रामायण', 'पंजाबी रामायण' आदि भारतीय भाषाओं में रचित रामकथा के प्रसंगों को भी ग्रहण किया है। अहमदबख्श थानेसरी ने नई उद्भावनाएं भी की हैं तथा कहीं-कहीं पर अन्य भारतीय भाषाओं के कथा-प्रसंगों का उनकी 'रामायण' के कथा प्रसंगों से उद्भुत साम्य है। अन्ततः यह कहना गलत न होगा कि अहमदबख्श को हिन्दी रामकाव्य परम्परा एवं अन्य भारतीय भाषाओं की रामकाव्य परम्परा का ज्ञान प्राप्त था, तभी उनमें से कई ग्रंथ प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में उनकी रामायण के प्रेरणा स्त्रोत बनें।

2.संक्षिप्त कथानक – अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण', 'वाल्मीकि रामायण' एवं 'रामचरितमानस' के समान काण्डों में

विभाजित हैं। यह रामायण आदिकाण्ड, अयोध्या काण्ड, अरणय काण्ड, किषिकन्धा काण्ड, सुन्दर काण्ड और लंका काण्ड इन छः काण्डों में विभक्त है और १६७३ चम्बोलों में अनुबन्धित है। प्रायः एक चम्बोले में आठ पंक्तियां होती हैं। प्रथम दो पंक्तियां दोहे की, फिर चार पंक्तियां चलत की और अन्तिम दो पंक्तियां मुकताल की हैं। विवेच्य 'रामायण' का संक्षिप्त कथानक काण्डानुसार प्रस्तुत है।

3.राम का स्वरूप और अन्य पात्र – अहमदबख्श थानेसरी ने रामकथा के नायक श्री राम के स्वरूप को लेकर समूची कथा को भव्यभवन के समान निर्मित किया है। सारी कथाएं प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से उन्हीं से सम्बन्धित हैं। अहमदबख्श थानेसरी ने राम को पारब्रह्म का स्वरूप प्रदान करते हुए कहीं पर भी चूक नहीं की है। हालांकि कवि ने अनेक स्थानों पर समाज की रूचि एवं रामायण को लोकरंजक बनाने हेतु कुछ मोड़ दिए हैं, किन्तु ये सभी राम के स्वरूप को विकृत नहीं करते। अहमदबख्श थानेसरी के राम हमारे समक्ष जहां एक और दशरथ के पुत्र लौकिक राजकुमार हैं तो वहीं दूसरी और अनूप, सगुण, निर्गुण अलौकिक ब्रह्म है। राम का अनूप, सगुण एवं निर्गुण रूप प्रस्तुत है –

गीध चला बैकुण्ठ को कर दर्शन भगवान्
गुणनवाद उच्चारता रिपू सूदन भान
राम तुम रूप अनूप सगुण निर्गुण
दस शीश बीस भुज का प्रचंड भव भय मोचन प्रभुनिसआसन
अनाद अगाध मर्याद काज गए प्रगट आप ब्रह्म पूर्ण धन
तुम्हे संत जी जपत अनन्त जान गुण जान पछान ऋषि सुमरन

मुकताल

सब जगत तुम्हारा नहीं तुम बिन निस्तारा
कर इतनी अस्तुति गीध बैकुण्ठ सधारा

उपरोक्त चम्बोले में राम को अनूप, निर्गुण, सगुण, अनाद, अगाध, अनन्त, मर्यादित आदि रूप में प्रस्तुत कर कवि ने समूची भक्ति को समेट दिया है। यहां पर राम दार्शनिकों के राम होते हुए भी संतों एवं भक्तों के भी भगवान हैं। इसके अतिरिक्त राम कुशल, प्रशासक, आदर्श मित्र, आदर्श शिष्य, आदर्श पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पति भी हैं और सबसे अहम् बात यह है कि अहमदबख्श के राम हरियाणवी राम हैं। वह हरियाणवी रीति-रिवाजों के अनुकूल पुत्र, आदर्श भ्राता, आदर्श पति भी है। वह हरियाणवी रीति-रिवाज के अनुकूल विवाह करते हैं और जीवन व्यतीत करते हैं। श्रीराम की आदर्श पत्नी सीता को कवि ने आदर्श पत्नी के अतिरिक्त धर्म को शक्ति रूप में अवतारी, समस्त ब्रह्माण्ड को रचने वाली एवं समस्त प्रजा की पालनहारी शक्ति के रूप में भी स्वीकार किया है –

अरी माता तू पाप को जिन पाला बत्तीस धार
सीता माता धर्म की शक्ति रूप अवतार
सर्व ब्रह्माण्ड के रचने हारी है
ऐसे मम भ्रात पिता सबके कुल खलक जगत बिस्तारी हैं।
देवताओं के देव महादेव आप प्रलयकाल करन अधिकारी हैं
यह ब्रह्म रूप सृष्टि रचिता विष्णु प्रजा पालन हारी हैं।

मुकताल

इनसे अधिकाई जगत में किसने पाई
जांऊ बन प्रभु संग मुझे आज्ञा दे भाई।

अहमदबख्श थानेसरी ने लक्ष्मण परम्परागत आदर्श भ्राता के रूप में हमारे समक्ष आते हैं। भरत को भी भ्रातृ रूप में उच्च आदर्श को छूता हुआ प्रस्तुत किया गया है। सुग्रीव एवं अनुमान आदर्श मित्रों की मिसाल हैं, बल्कि हनुमान तो राम के अन्य उपासक हैं। विभीषण को भी कवि ने राम की शरण में आने से पूर्व उनके अनन्य भक्त रूप को दिखाया है। माता कौशल्या को वात्सल्य की मूर्ति रूप में एवं उनके विवेक और त्याग को चित्रित किया है। रावण को धोखेबाज, फरेबी, कपटी एवं अभिमानी राजा के रूप में दिखाकर उसकी क्रूरता एवं शक्ति के प्रदर्शन का चित्रण किया है। रावण की पत्नी मन्दोदरी को हमेशा प्रेरणदायिनी एवं अधर्म की भर्त्सना करने वाली पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

4.सांस्कृतिक चित्रण – अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' में हिन्दू संस्कृति का जो निदर्शन हुआ है, विशेषकर हरियाणावासियों

की रूचि एवं रीति रिवाजों के अनुकूल जो वर्णन किया गया है, वह अद्वितीय है। निःसन्देह कवि ने धार्मिक विश्वासों, पूजा-अर्चना, पर्व-त्यौहारों, ब्याह-शादियों के रीति-रिवाजों आदि संस्कृति के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश किया है। आम जनता में जो कथाएं एवं रूढ़ियां प्रचलित थी, उनको कवि ने बुद्धि कुशलता के बल पर अपनी 'रामायण' में बड़ी सहजता से स्थान दिया है। श्रीराम के विवाह की नाई द्वारा चिट्ठी लाने से लेकर सीता की डोली ले जाने तक के समूचे प्रसंग को कवि ने यथावत हरियाणा के किसी छोरे एवं छोकरी के विवाह के समान चित्रित किया है। यहां पर एक उदाहरण प्रस्तुत है -

मंडा चढ़या जनक ने बुला बिठाए पंच
सीता का कंगणा बंधा खिल गया रूप अटंच
जानो साक्षात लक्ष्मी बिराज रही
सब देवांगना महलों में धर रूप स्त्रियां आज रही
चल ले बारात नृप सबके साथ जहां दशरथ महाफिल साज रही
एक सहस्त्र अशरफी अश्व बहुत दस गज रथ बेअन्दाज रही

मुकताल

हुई सिमधी से मिलाई जनक शाबाशी पाई
चलो जल्द ढुकाओं राव क्यों देर लगाई।

इस चम्बोले में राजा जनक ने यहां सीता की बारात के आगमन पर पंचों को बुलाकर घर के आंगन में विवाह का मंडा बांध गया है। सीता को कंगणा पहनाया गया है। राजा दशरथ अपनी बारात में असंख्य घोड़े और हाथी लेकर आए हुए हैं। दूल्हा और दुल्हन के विवाह-मण्डप में पहुंचने से पूर्व दोनों सिमधियों (सम्बन्धियों) की मिलनी होती है और ढुको की तैयारी हो रही है अर्थात श्री राम मोड़ (सेहरा) बांधकर राजा जनक के द्वार पर पहुंचने के लिए तैयार हैं, जहां पर स्त्रियां दूल्हे की आरती उतारने के लिए खड़ी हैं। इस प्रकार तुलसीदास जहां हिन्दू लोकमानस के कण्ठहार बने, वहां अहमदबख्श हरियाणा की जनता में प्रचलित रीति-रिवाजों को प्रस्तुत करने वाले लोककवि स्वीकार किए जा सकते हैं।

5.प्रेम एवं नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण – अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण' में प्रेम के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का सुन्दर वर्णन किया गया है। विवाह से पूर्व पुष्पवाटिका में प्रेम के वशीभूत सीता और राम के नेत्र इस प्रकार मिलते हैं-

इधर नेत्र सिया के मिले उधर नेत्र रघुवीर
प्रेमबाण कसने लगा बिध गया सकल शरीर
प्रभु की धुन में मन चित गेर लिया
तथ्य प्रेम के बीज को रीझ हृदय के चौंक बखेर लिया
लगी ललक झलक दर्शन रघुबर नां छपकी पलक सुख ढेर लिया
जब तकत तकत बहुत थकत भई पकड़त मुख अंचल गेर लिया।

मुकताल–

ऐसे शर्माई बसे हृदय रघुराई
नेत्र लिए दो मुंद बात करने नहीं पाई।

विरह वर्णन को तो अहमदबख्श ने इतने भव्य रूप में प्रस्तुत किया है जिससे हमें जायसी के विरह-वर्णन की याद ताजा हो जाती है। श्री राम के वनगमन पर समूची अवधपुरी शोकाकुल हो उठती है। सभी नर-नारी इतने व्याकुल हो उठते हैं कि श्रीराम के पास जाए बिना उनसे रहा नहीं जाता। पिता दशरथ का विरहाग्नि में जलकर देहावसान हो जाता है। माता कौशल्या भी अपने पुत्र के विरह में अत्यंत पीड़ित हैं। सीता हरण के पश्चात राम और सीता की पृथक-पृथक वेदना, हृदय विदारक है। श्रीराम सीता को ढूंढते हुए वृक्षों, पक्षियों, लताओं, कलियों, पृथ्वी, आकाश और सूर्य, बिजली एवं बादलों से भी जानने का प्रयास करते हैं - यथा

राम सिया ढूंढन चले ले लक्ष्मण जी साथ
वृक्ष-वृक्ष बन बन लता सिया को पूछत जात
अरे पंकज जल ताल कहां सीता
अरे खाग मृग गज किन्नन वनचर गिरवर वृक्ष साल कहां सीता
अरे कुन्द कली दाड़म मधुकर रे कुंजमराल कहां सीता
अरे रवि घन नभ दामिनी पृथ्वी धरती पाताल कहां सीता

मुकताल–

बतला दो भाई किसी ने सिया चुराई
पूछत आगे जां श्री गोबिन्द रघुराई।

अहमदबख्श का नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण अत्यंत प्रगतिशील है क्योंकि सामन्ती समाज में विवाह पहले हो जाता है, प्रेम बाद में शुरू होता है, किन्तु पुष्पवाटिका प्रसंग में राम और सीता का उदित पूर्वराग का प्रणय ही अन्ततः परिणय में परिणत होता है। इसके अतिरिक्त कवि ने नारी को शील, सहज एवं शर्मिली रूप में भी चित्रित किया है। एक और जहां मन्दोदरी को अधर्म के विरुद्ध उपदेश देती हुई दिखाया गया वहां दूसरी और मन्थरा बांदी को शत्रुघ्न द्वारा लात मारकर उसकी भर्त्सना की गई है। सुलोचना सती प्रसंग में कवि ने अत्यंत सीमितता से काम लिया है क्योंकि यह प्रथा परम्परा का निर्वाह कर रही थी। भरत द्वारा भी धर्म के विरुद्ध कार्य करने वाली माता कैकेई की भर्त्सना की गई थी।

6.युगीन चित्रण – अहमदबख्श थानेसरी ने रामकथा को काव्य रूप प्रदानकर हिन्दु लोकमानस के विश्वास का सत्कार किया है और हरियाणावासियों के लिए रामकथा को हरियाणवी परिवेश में ढाल कर प्रस्तुत किया है। संस्कृत में रचित 'वाल्मीकि रामायण' और अवधी में रचित 'रामचरितमानस' शायद हरियाणा के लोगों के लिए समझ से बाहर की वस्तु थे, अतः सांग शैली में रचित अहमदबख्श थानेसरी–कृत 'रामायण' जब सांग के रूप में मंच पर खेली जाती थी तो लोगों को बड़ी सरल और सहज लगती थी। विवेच्य 'रामायण' के आरम्भ में ही ऋषि ऋंगी के प्रसंग में ऋषि को भरमाकर लाने वाली स्त्रियां निःसन्देह रामायणकालीन वेश्याएं न होकर मध्यकालीन तवाइफे हैं जो कोठों में रहती हैं। वे कंघी–पट्टी के दुरुस्त, चुस्त अंगिया और लहंगा पहन, पान खाकर, बिछी हुई जाजम पर बैठती है। वे वेश्याएं ऋषि को जलेबी, लड्डू, चटपट बड़े, पापड़, पेड़ा आदि भोज्य पदार्थ देती हैं जिन पर युगीन छाप है। श्रीराम के विवाह के अवसर पर मंडे पर बैठने वाले पंच हरियाणा के चौधरी हैं। बारात में जाने वालों में राय, भाट और जाट अफसर भी हैं। इसके अतिरिक्त कवि ने तत्कालीन ओहदेदारों जैसे – नाजर, कानूनगो, थानाध्यक्ष, तहसीलदार, खजांची, कोतवाल, मुंशी, कमेटी मेम्बर, नम्बरदार, पेशकार आदि का भी जिक्र किया है। हरियाणा में पर्दा–प्रथा बहुत प्राचीन है जिसका प्रभाव दशरथ के राजभवन में भी देखा जा सकता है। राजा दशरथ की रानियां गुरु वशिष्ठ से बात करते समय पर्दे में रहती हैं। इस प्रकार अहमदबख्श थानेसरी–कृत 'रामायण' में वर्णित छोटे से छोटे प्रसंग पर भी तत्कालीन छाप देखी जा सकती है। विवाह के अवसर हों या मृत्यु के सभी में तत्कालीन हरियाणवी परिवेश के अनुकूल निर्वाह किया गया है।

7.रस विवेचन एवं भाष शैली – अहमदबख्श थानेसरी–कृत 'रामायण' में वीर, करुण, भक्ति, श्रृंगार आदि रसों का सम्यक चित्रण हुआ है। कवि ने वीरता का जो वातावरण दिखाया है, वह रीतिकालीन वीर भावना के साहित्य के अनुरूप है। युद्धों के प्रसंगों में कवि ने मात्र शब्दों के टकराव से युद्ध का वातावरण बना दिया है। करुण रस का विवेचन दशरथ–मरण एवं लक्ष्मण मुर्छा प्रसंग में अत्यंत मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी बना पड़ा है। राम के वनगमन पर अयोध्यावासियों का रुदन करना, रावण–वध पर मन्दोदरी का रुदन, मेघनाथ वध पर सुलोचना का रुदन आदि हृदय ध्रूव एवं हवरल–साध्य बन गया है। भक्ति रस को तो कवि ने समूची रामायण में सजा दिया है। प्रत्येक स्थल पर राम को भगवान रूप में चित्रित किया गया है और संतों, मुनियों एवं इन्द्रादि देवताओं से उनकी स्तुति करवाई गई है। श्रृंगार रस श्री रामसीता के पूर्वराग प्रसंग, सीता हरण के पश्चात राम की वेदना, सीता का विरहाग्नि में जलना आदि प्रसंगों में प्रदर्शित हुआ है।

साहित्यिक दृष्टि से विवेच्य 'रामायण' लोकनाट्य शैली के अंतर्गत आती है। सांग शैली में रचित, चम्बोलों में अनुबन्धित इस रचना को कई बार रंगमंच पर अभिनीत किया गया है। अभिनेयता की दृष्टि से यह सफल कृति है क्योंकि इसमें संवादीय शैली अपनाई गई है। इसके संवाद पात्रानुकूल हैं और उनमें ओजस्विता एवं चमत्कार आदि गुण विद्यमान हैं। विवेच्य 'रामायण' में कई शब्दालंकारों एवं अर्थालंकारों के अतिरिक्त उपमा, रुपक, उत्प्रेक्षा आदि का सुन्दर वर्णन हुआ है। काव्य रूप की दृष्टि से यह महाकाव्य की कोटि में आती है। भाषा की दृष्टि से भी हम इसे अत्यंत समृद्ध कह सकते हैं। इसकी भाषा मूलतः हिन्दी होते हुए भी हरियाणवी बोली है। हिन्दी हरियाणवी के अतिरिक्त अहमदबख्श ने पंजाबी एवं उर्दू के अनेक शब्दों को ग्रहण किया है जो कि स्वाभाविक था क्योंकि कवि स्वयं उर्दू भाषा को जानते थे और उस समय हरियाणा पंजाब एक होने के कारण पंजाबी का प्रभाव भी आवश्यक था। कवि ने भाषा में मर्मस्पर्शिता, प्रांजलता, सहजता एवं सरलता आदि गुण विद्यमान हैं।

अहमदबख्श थानेसरी अपने विशाल व्यक्तित्व एवं बहुमुखी प्रतिभा के कारण हरियाणा के ही नहीं अपितु हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि स्वीकार किये जा सकते हैं। हिन्दी साहित्य के नवजागरण काल में अहमदबख्श ने रामकथा को काव्य रूप प्रदान कर निःसन्देह हरियाणावासियों को वह अमृत पिलाया जिसकी उनको जरूरत थी क्योंकि उस समय जनता अंग्रेजी साम्राज्यवाद का शिकार थी। एक मुसलमान कवि का रामकथा लिखना अपने आप में ही एक उपलब्धि है। उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक एवं राजनैनिक झमलों के बीच अपनी कला के माध्यम से लोगों को अत्याचार, शोषण और धर्म के खिलाफ जागरूक करना भी इनकी उपलब्धि है। हरियाणवी बोली या हरियाणवी लोकसाहित्य में प्रथम रामायण लिखकर कवि ने एक महत्पूर्ण कार्य किया है। देश की अन्य भाषाओं में रामकथा की एक समृद्ध परम्परा है। हरियाणावी में भी 'रामायण' लिखकर अहमदबख्श ने देश में भावात्मक एकता का प्रमाण दिया है। हरियाणावासियों की जिन्दगी, रीति–रिवाज, खान–पान, पर्व त्योहार, ब्याह–शादी को रामकथा के माध्यम से प्रस्तुत कर कवि ने निःसन्देह अपना काम रामकाव्य की परम्परा के अन्तर्गत आने वाले अखिल भारतीय साहित्य में जोड़ लिया है।

सन्दर्भ :

१.अहमदबख्श थानेसरी-कृत 'रामायण', स. बालकृष्ण मुज़्तर, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८३
२.रामकथा उत्पति और विकास, डॉ. कामिल बुल्के, प्रयाग हिन्दी परिषद, प्रयाग विश्वविद्यालय, १९६२
३.भारतीय साहित्य में रामकथा, स. कुमार विमल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, १९८७
४.श्रारामचरितमानस, तुलसीदास, काशीराज संस्करण, १९९२
५.रामचरितमानस तुलनात्मक अध्ययन, स. नरेन्द्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, १९७४
६.पंजाब का हिन्दी साहित्य, डॉ. मनमोहन सहगल, लीना पब्लिशर्ज, त्रिवेणी चौक, पटियाला
७.हिन्दी रामकाव्य : विवध आयाम, डॉ. मदन गुलाटी, जनप्रिय प्रकाशन, विश्वासनगर, नई दिल्ली, १९८७
८.कृतिवासी बंगला रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, रमानाथ त्रिपाठी, भारत प्रकाशन मन्दिर, अलीगढ़, १९६३
९.रामचरितमानस और पूर्वाचलीय रामकाव्य, रमानाथ त्रिपाठी, आदर्श साहित्य प्रकाशन, वैस्ट सलीमपुर, दिल्ली, १९७२
१०.हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् २०४२
११.वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस का तुलनात्मक अध्ययन, विद्या मिश्र, विश्वविद्यालय हिन्दी प्रकाशन, लखनऊ, संवत् २०१५
१२.तुलसीदास रामचरितमानस और एकार्थी भावार्थ रामायण, विनय मोहन शर्मा, अनादि प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७५
१३.रामचरितमानस और पंजाबी रामकाव्य, शान्ता लाम्बा, जनप्रिय प्रकाशन, विश्वासनगर, नई दिल्ली, १९८४
१४.बंगला साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, डॉ. सत्येन्द्र, प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ, १९६१
१५.रामायण, वाल्मीकि, पण्डित पुस्तकालय, काशी, १९५१
१६.हिन्दी रामकाव्य और विष्णुदास की रामकथा, मोहन सिंह तोमर, तक्षशीला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, १९७९
१७.रामकाव्यधारा अनुसंधान एवं अनुचितंन, भगवतीप्रसाद सिंह, लोकभारती प्रकाशन, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद, १९७६
१८.महाकवि तुलसीदास और युगसन्दर्भ, डॉ. भागीरथ मिश्र, साहित्य भवन (प्रा०) लिमिटेड, इलाहाद, १९७३
१९.हरियाणा की लोकधर्मी, नाट्यपरम्परा, डॉ. पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, १९८७

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org